रिकॉर्ड :– तुम्हीं हो माता..... ॐ पिताश्री 15/7/1965

ओम् शान्ति। बच्चों को बाप मिला है और अब अनुभव से कहते हैं बरोबर काँटे से फूल और कोई बना नहीं सकता। भारत दैवी फूलों का परिस्तान था, अभी काँटों का जंगल है। अभी तुम जो सुनते हो, महावाक्य सुनते हो। महान ऊँच ते ऊँच है ना। हरेक बात में महान है। महान सुख का सागर है। महान ज्ञान का सागर है। महान शान्ति का सागर है। बच्चे अच्छी रीति समझ चुके हैं आगे हम हर बात में काँटे थे। हर कर्म–इन्द्रियों से एक/दो को दुख ही देते थे। ..... अब हम कर्म–इन्द्रियों से किसको दुख ना देने की प्रतिज्ञा करते हैं। जैसे बाप दुख हर्ता, सुख कर्ता है वैसे बच्चों को भी बनना है। कोई को भी दुख ना देना है। हरेक को सुखधाम का ही रास्ता बताना है। यह सब बी०के०कुमारियाँ किसकी मत पर चलते हैं? श्रीमत पर। ब्रह्मा की मत गाई हुई है ना। यूँ तो सभी को गुरु कह देते– गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु भी कहते; परन्तु गुरु को फिर भगवान नहीं कहा जाता। उन्हों को देवता कहा जाता है। मात–पिता भी उनको नहीं कह सकते। बाबा ने समझाया है लौकिक बाप से तो अल्पकाल सुख का वर्सा मिलता है। वो मिलते हुए भी पारलौकिक माँ–बाप को याद करते हैं। ब्र०वि०शं० को तो याद नहीं करेंगे। उनको मात–पिता नहीं कहेंगे। वह तो सूक्ष्मवतनवासी हैं ना। उनको तो ब्रह्मा देवता नमः, विष्णु देवता... कहते हैं। इतने सब बच्चे किसको मात–पिता कह ना सके। स्वर्ग में ल०ना० को भी मात–पिता नहीं कह सकते। यह पारलौकिक मात–पिता लिए गाते हैं तुम मात–पिता...। बहुत करके आशीर्वाद अथवा कृपा बहुत माँगते हैं। अभी तुम जानते हो, बेहद का बाप कैसे आशीर्वाद अथवा कृपा करते हैं। ऐसे नहीं कहते चिरंजीव भव... बाप तो आकर सहज राजयोग ज्ञान की शिक्षा देते हैं। आशीर्वाद अथवा कृपा तो भक्तिमार्ग में ढेर करते हैं एक/दो को। अच्छी दृष्टि रखना, दया दृष्टि रखना सो तो प०पि०प० के सिवाय कोई रख ना सके। ऐसे नहीं कि देखने से मनुष्य कोई देवता बन जाएँगे। नहीं। यहाँ तो यह पाठशाला है। पाठशाला में पढ़ना होता है। गीता पाठशाला है ना। सुनना होता है। वहाँ वो सब शास्त्र ही सुनाते हैं। शास्त्रों को कब यह नहीं कहेंगे तुम मात–पिता...। यह महिमा शास्त्रों की नहीं। गीता को भी ऐसे नहीं कहेंगे। यह महिमा है ही एक बाप की। सो भी बाप जब मनुष्य तन में आए अपना परिचय देते हैं तब तुम कहते हो। अभी तुम जानते हो, हम निराकार को गाते थे, वो ही निराकार इस साकार तन में आए हैं। मम्मा–बाबा–दादा हैं। यह कुटुम्ब हुआ ना। ईश्वरीय कुटुम्ब। इतनी बड़ी पाठशाला तो शहर से थोड़ी दूर होनी चाहिए। यहाँ यह देखो शहर से कितना दूर है। कितना सन्नाटा लगा हुआ है; क्योंकि हमें चाहिए ही शान्ति। हमको जाना है शान्तिधाम। शान्तिधाम किसको कहा जाता है अब तुम समझते हो। आत्मा तो है ही शान्त स्वरूप। मन को शान्ति चाहिए ..... ज्ञानतंतु नहीं कह सकते। आत्मा में मन–बुद्धि हैं ना। आत्मा और शरीर हैं। कान–नाक आदि को तो शांति नहीं चाहिए। शान्ति चाहिए आत्मा को। आत्मा ही अशांत रहती है। आत्मा में ही अंदर सारा पार्ट भरा हुआ है, जो इमर्ज़ तब होता है जब शरीर मिलता है। आत्मा में ही सारा खेल भरा हुआ है। इतनी छोटी सी आत्मा में कितना पार्ट है। शरीर मिलने से वह पार्ट बजावेगी। यह भी अभी तुम जानते हो। बरोबर देवी–देवता धर्म वाली ही आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट है। यह तुम अभी जानते हो। सतयुग में नहीं जानेंगे। इस समय ही गाया जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक; क्योंकि तुम अभी ईश्वरीय औलाद बने हो। मम्मा–बाबा कहते हो ना। अज्ञान काल में भी गाते थे त्वमेव माता...; परन्तु यह महिमा किसकी है, यह नहीं जानते। सबके आगे जाए महिमा गाते थे। कब–2 सन्यासियों के आगे भी जाकर स्तुति करते हैं। अंधश्रद्धा तो बहुत है ना। रावण ने सबकी बुद्धि को बिल्कुल अंधा बना दिया है। अब तुम बाप द्वारा सारे विश्व के आदि–मध्य–अंत को जान चुके हो। मात–पिता से सुख घनेरे का वर्सा भी ले रहे हो प्रैक्टिकल में। अभी समझते हो हम जो जन्म–जन्मांतर शास्त्र आदि पढ़ते आए सभी व्यर्थ ही था, गिरते ही आए। यह भी ड्रामा में नूँध है। भक्ति करनी है। ना भक्ति बदलनी है, ना ज्ञान बदलना है। भक्ति की भी बड़ी सामग्री है। वेद–शास्त्र अथाह हैं। लिस्ट निकालो तो

बहुत बड़ी लिस्ट हो जावेगी। सारी दुनिया में क्या–2 कर रहे हैं। कितने मेले–मलाखड़े आदि लगते हैं। अब बाप कहते हैं– बच्चे, आधा कल्प तुम भक्ति करते–2 थक गए हो। इस पढ़ाई में तो थकने की बात ही नहीं। इसमें तो और ही (खुशी) होती है; क्योंकि यहाँ है कमाई। कमाई में कब उबासी वा झुटके नहीं आने चाहिए। आते हैं तो समझा जाता है धारणा कच्ची है, नॉलेज की वैल्यु का पता नहीं है। बाप की याद में बैठने से भी बहुत कमाई होती है। इसमें थकना ना है। विवेक कहता है, एक दिन तुमको अथक ज़रूर बनना है। पुरुषार्थ करते–2 अथक अर्थात् कर्मातीत अवस्था को पाना है। अब जो पुरुषार्थ करे। माला कितनी छोटी है। प्रजा तो बहुत बड़ी बनती है। बाप पुरुषार्थ कराते रहते हैं। कहते हैं फॉलो मदर–फादर। बच्चे तो ढेर हैं ना। प्रजापिता ब्रह्मा के यह एडॉप्टेड बच्चे हैं। शिवबाबा के एडॉप्टेड बच्चे नहीं कहेंगे। शिवबाबा के तो तुम आत्माएँ बच्चे हो ही। अज्ञान काल में भी शिवबाबा कहते रहते हैं; परन्तु शिवबाबा कौन है? उनका पार्ट क्या है? यह कोई भी नहीं जानते हैं। शिवबाबा कहते हैं, मेरा भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है। ऐसे नहीं, जो चाहूँ सो करूँ। हमारा भी ड्रामा में जो पार्ट होगा वो ही चलेगा। इसमें कृपा वा आशीर्वाद माँगने की बात ही नहीं है। बाप जानते हैं, बच्चों की कैसे पालना करनी है ज्ञान और योग से। तुम्हारी पालना है ही ज्ञान–योग की। मुझे कहते ही हैं बाबा; क्योंकि रचयिता ठहरा ना। तो ज़रूर बाबा कहेंगे। लौकिक माँ–बाप होते हुए भी पारलौकिक को याद करते हैं। अभी तुम जानते हो, पारलौकिक मात–पिता आए हुए हैं, हमको राजयोग सिखला रहे हैं। हाँ, शरीर निर्वाह तो सबको अपना करना ही है। परहेज के लिए भी समझाया जाता है, अपवित्र कोई वस्तु ना खानी चाहिए। बाकी घर में तो रहना ही है। सरेण्डर हो गया, बाबा यह सब कुछ आपका है। बाबा का सब कुछ समझ कर चलते हैं तो वो जो खाते हैं सो गोया यज्ञ का ही है। हम ट्रस्टी हैं। हम यज्ञ का खाते हैं। तो वह सतोगुणी ही है। अगर अर्पणमय ना है, अपन को ट्रस्टी ना समझते हैं तो फिर वह यज्ञ का ना हुआ। पहले तो अपन को ट्रस्टी समझना है। मनुष्य कहते भी हैं, ईश्वर ही सबको देने वाला है। देवताओं की पूजा करते हैं। समझते, उन्हों द्वारा मिलता है। ऐसे भी समझते हैं; परन्तु देने वाला सबको एक बाप है। सबका दाता एक है। भक्तिमार्ग में हरेक इन्श्योर ईश्वर पास ही करते हैं। समझते हैं, दूसरे जन्म में मिलेगा। तुम भी सब कुछ इन्श्योर बाप के पास करते हो। यह शिक्षा मिलती है दूसरे जन्म लिए। अच्छे कर्मों का फल दूसरे जन्म में मिलता है। देते ईश्वर ही हैं। ईश्वर अर्पण करते हैं ना। ईश्वर को अर्पण अर्थात् इन्श्योर करते हैं। वो है इनडायरैक्ट, यह है डायरैक्ट। वह प०पि०प० को जानते ही नहीं तो सब कुछ अर्पण कर नहीं सकते। यहाँ तुम सब कुछ अर्पण करते हैं। बाप कहते हैं अपन को ट्रस्टी समझो। तुम जो खाते हो, समझो हम शिवबाबा के यज्ञ का खाते हैं। संभाल भी करनी होती है। कोई तमोगुणी भोग लगा ना सके। मंदिरों में भी शुद्ध भोग लगाते हो ना। वहाँ वैष्ण(व) ही रहते हैं। यहाँ तो सब विकारी हैं। निर्विकारी श्रेष्ठ शरीर यहाँ आवे कहाँ से? ल०ना० के तो श्रेष्ठ शरीर हैं ना। भ्रष्टाचार विकार को कहा जाता। अभी तुम बच्चे समझते हो, हम मात–पिता के सन्मुख बैठे हैं, जिनको आधा कल्प पूरा पुकारा है। आधा कल्प भक्ति करने वाले ही यहाँ आवेंगे। बहुत तीखी भक्ति करते हैं। तुम बच्चों को फिर तीखा उठाना है। थोड़े में राज़ी नहीं रहना है। कितनी प्वाइंट्स दी जाती हैं समझाने लिए। बूढ़ियाँ तो इतनी समझ ना सके। उनको फिर बाबा कहते हैं तुम सिर्फ यह किसको समझाओ, पारलौकिक बाप का परिचय है? उस बाप को याद करो। तुम भक्त हो, वो भगवान है। भगवानुवाच्य मेरे को याद करो तो तुम मेरे मुक्तिधाम आ जावेंगे। कृष्ण कहेंगे कि मेरे धाम आ जावेंगे। पहले तो निर्वाणधाम जाना है। उनको याद करो। कृष्ण तो ऐसे कह ना सके। उनको थोड़े ही वापस जाना है। इसी एक बात पर ही कितना रोला हो गया है। शास्त्र सब झूठे हो गए हैं। इसलिए पहले एक बात पर निश्चय कराओ। (अधूरी मुरली)